Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में व्यक्त वर्तमान समस्या: आतंकवाद

डॉ. जोराभाई बी. पटेल
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
श्री एस. पि. पटेल आर्ट्स कोलेज, सीमलिया

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर लिखित एक बहुचर्चित महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो यह लम्बी जिरह का सुनिश्चित परिणाम है| 1971 की इस कहानी में देश में बार-बार हो रहे साम्प्रदायिक दंगो और दंगोके पीछे वहशी मानसिकता ने सृजक मानस को जकजोरा था| प्रस्तुत उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में न केवल भारत किन्तु पूरे विश्व में स्थान–स्थान पर धर्म के नाम पर हो रहे भीषण नरसंहारो, मानवता की नृशंस हत्या, शक्तियों-महाशक्तियो द्वारा दुनियाके छोटे-छोटे देशो, विशेषत: तीसरी दुनिया के दुखियारे देशो में ढाए जा रहे जुल्मो-सितम के पीछे छिपे कारणों की खोज में परेशान है – 'अदीबे आलिया'|

प्रस्तुत 'कितने पाकिस्तान' एक प्रतीकात्मक शब्द है, जो धार्मिक उन्माद के वशीभूत समूह द्वारा की जा रही मांग को व्यंजित करता है |'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कई ऐसी समस्याए है जो अजगर रुपी मायावी दानव की तरह मानवता के अस्तित्व को निगल लेना जा रहा है| इन समस्याओं में प्रमुख है – युध्ध, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, पृथकतावाद, जातिवाद, भाषावाद, आदि की त्रासदी के नग्न सत्य को जनता के सामने लाने का प्रयास किया है | आतंकवाद वर्तमान की प्रमुख समस्या है जिसे इस प्रकार देखा जा सकता है |

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है आतंकवाद, जो बीसवीं शाताब्दि की दें है, जिसने भारत को नहीं बल्कि विश्व के अधिकांश देशों को भीतर तक खोखला कर दिया है | भारत ने पिछले दो दशकों में आतंकवाद के कारण जीतनी हानि उठायी है, शायद ही विश्व के किसी को देश ने जेली हो | आतंकवाद लाखो लाशें, हजारो अनाथ बच्चे , करोडो की संपत्ति , लोगो में समायी दहशत आदि को एक साथ निगल गया है|

अभी तक आतंकवादी हमलों का शिकार विश्व के छोटे देश होते थे, तो शक्तिशाली देश संवेदना प्रकट करने की बजाय उनका उपहास उड़ाते थे | परिणाम स्वरुप विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अमरीका भी आतंकवाद रुपी दानव से बच नहीं पाया है | 11 सितम्बर 2000 को हुए विध्वंशकारी हमले इसका उदाहरण है, उसके बाद ही उसे आतंकवाद पीड़ित राष्ट्रो का दरद समज में आया की यह दानव कितना भयानक है | इसके बाद ही अमरीका के राष्ट्रपति जोर्ज बुश और विदेश मंत्री कोलेन पावेल ने विश्वव्यापी आम सहमति बनाने के प्रयास किये और आतंकवाद के विरुध्ध ठोस कदम उठाने के प्रयास किये|

विश्व के खूंखार कट्टरवादी आतंकवादी गिरोह द्वारा 11 सितम्बर को अमरीका पर विनाशकारी हमले ने एक तरह से पूरी दुनिया को दहशत में डाल दिया | आज पूरा भारत देश आतंकवाद से पीड़ित है| कमलेश्वर ने इसी समस्या की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास प्रस्तुत उपन्यास में किया है | “तभी उत्तर पूर्व से तडतडाती एक गोली आयी | उल्फा उग्रवादियो ने दस्तक दी, चाय बागान से यह दस्तक आई थी, तब तक सन 1984 की विधवाये दस्तक देने लगी | दक्षिणसे नक्सलपन्थियो ने दस्तक की बटाला बस काण्ड की लाशें चीखने लगी |”[1]

साम्राज्यवाद ही धार्मिक कट्टरता, अंध राष्ट्रवाद और आतंकवाद को जन्म देता है | बम्बई में 1993 डेढ़ दर्जन जगहों पर कोई डॉ घंटो के बिच बम्ब विस्फोट किये गए, उसने एयर इंडिया के दफ्तर, बम्बई स्टाफ एक्सचेंज को चुना गया | पिछले पांच वर्षो में आतंकवाद की समस्या ने भारत में विकराल रूप धारण कर लिया है| सन 2001 में लाल किल्ले पर हमला, पहल गाँव में तीर्थयात्रियों का कत्ले आम, नेपाल से आ रहे यात्री विमान का अपहरण, 13 दिसम्बर को संसद पर हमला दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र पर आघात है | इसके अतिरिक्त गुजरात के अहमदाबाद में आतंकवादी हमला हुआ, जिसमे 50 से भी अधिक निर्दोष लोगों ने अपनी जान गवाई | जम्मु के अष्टधाम व रघुनाथ मंदिर पर हमले इसके जीते जागते उदाहरण है| सुभाषचन्द्र गुप्त के अनुसार – “किसी समाज, किसी संस्कृति की विकृति तब शुरू होती हे, जब कोई कार्य कितना भी अमानवीय हो, लेकिन समाज और संस्कृति से जुड़े लोग उसे चुपचाप सहन करते रहे|” २

गद्दार देशद्रोहि भारत में पकडे गए आतंकवादियो को निर्दोष सिध्ध करने के लिए जी-जान से जुटे हुए है और इस तरह पाकिस्तान को उकसा रहे है कि भारत पर हमला कर दे| यह कोई नै बात नहीं है| वास्तव में भारत का इतिहास हिन्दुओ की गद्दारी का शर्मनाक दस्तावेज है| यहाँ के देशद्रोही नेताओं ने वोट बैंक की राजनीति के तहत आरक्षणवाद, दलितवाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, अल्पसंख्यकवाद चलाकर आम जनता को ख़ेमो में बाँट दिया है| तत्कालीन समय में बिलकुल प्रस्तुत है| ऐसे में भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाषचंद्र बोस, नाथूराम गोडसे आदि क्रान्तिकारियों तथा देश-भक्तों को याद करना नहीं भूलते|

आतंकवाद के भी कई प्रकार है- जैसे की धार्मिक आतंकवाद, आर्थिक आतंकवाद | |धार्मिक आतंकवाद, आतंकवाद का सबसे पुराना तरिका है | प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वर ने इस्लाम और इसाई

धर्म के लोगो द्वारा अन्य धर्मो पर किये गये अत्याचारों पर प्रकाश डाला है | "ओप्लोमन साम्राज्य का शंहशाह सलीम प्रथम चीखा जीसस क्राइस्ट की करुना, अहिंसा, पश्चाताप, दया की जगह जितनी बर्बरता, हिंसा की जगह जितनी हिंसा, पश्चाताप की जगह जितनी श्रेष्ठताग्रस्त नक्सलवाद और दया की जगह दयाहीनता और हत्या का जितना अमानवीय इतिहास मौजूद है, वह तो दुनिया के किसी धर्म के पास मौजूद नहीं है|"3 इसाई धर्म की आलोचना को सुनकर फ्रांस के राजा क्रासिस ने सलीम को ललकारते हुए कहा – "तुम्हारे इस्लाम इतिहास हम कैथोलिक इसाइयों से कही ज्यादा बर्बर है, खुद तुमने अपने धर्म भाइयो शियाओं के साथ जो पाशवि अत्याचार किये, उन पर तुम पर्दा नहीं डाल सकते|"[5] इससे स्पष्ट है की विश्व का इतिहास एक धर्म के लोगों द्वारा दुसरे धर्म के लोगों के ऊपर किये जाने वाले क्रूर इतिहास से भरा हुआ है |

आर्थिक आतंकवाद दूसरा प्रमुख कारण है | इसमे पूंजीवादी देश अपनी आर्थिक उन्नति के नशे में चूर होकर अन्य देश के हितों के साथ छेड़छाड़ करते रहे है | कमलेश्वर ने प्रस्तुत उपन्यास में साम्राज्यवादी नीतियों पर तीखा प्रहार किया है | उपन्यास का पात्र अदीब कहता है – "बाजारों के लिए ही बनाते है साम्राज्य और साम्राज्यों को जीवित रखने के लिए ही बनाए जाते है बाजार | साम्राज्यों के रूप बदल सकते है, परन्तु इन पूंजीवादी प्रजातंत्रो को जीने के लिए मुनाफे के बाजारों की जरुरत है |"[4] तो एक अन्य पात्र महमूद कहता है – "आप ठीक फरमा रहे है ..... आज भी भारत के हजारो गाँवों में जहाँ पिने का साफ़ पानी नहीं पहुँच सका है, वहाँ पेप्सी और कोक पहुँच चुका है |"[5]

अत: आर्थिक आतंकवाद का प्रमुख कारण मानव की अधिक धन कमाने की लिप्सा है, इस कारण होने वाली असमानता से विश्व मानव समुदाय बंट रहा है, जिसके कारण अनेकानेक समस्याएँ जन्म ले रही है |

वस्तुतः आतंकवाद या विस्फोट किसी भी देश में किये गए हो, नाश धरती और मानवता का ही हुआ है | यदि आप दूसरो को नष्ट करने के लिए सृष्टि को ही नुकसान पहुँचाना चाहोगे तो आप भी इससे क्या बच पायेंगे? इसका समाधान कमलेश्वर की द्रष्टि में एक ही है, कुछ और लोग समाज में कबीर जैसे पैदा हो, दर्जनों बोधिवृक्ष की पौध लगाकर नीलकंठ की तरह उन दजहरिली जगहों का सारा विष सोख ले, जिससे उनसे प्रेरणा लेकर अन्य व्यक्ति भी इस प्रयास में अपनी सारी शक्ति लगा दे |

सन्दर्भ संकेत

1. कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान ' पृ. 162
2. सुभाषचंद्र गुप्त , अब 25 149
3. कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' पृ. 294
4. कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' पृ. 291
5. वाही, पृ. 291